International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 11 Ser. II ||November, 2021 || PP. 51-59

झारखण्ड राज्य के एनजीओ संचालित निजी विद्यालयों का ग्रामीण विकास में भागीदारी का अध्ययन करना

तरूण कुमार महतो[1] एवं खगेन्द्र कुमार[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
[2]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

सारांश
समय बदल रहा है और लोगों के मानसिकता में भी बदलाव आ रहा है। जो ग्रामीण समाज रूढ़ियों और परम्पराओं में जीता रहा था, शिक्षा के पहुँच ने सबको विकासात्मक दिशा में मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज गाँव के न सिर्फ बच्चे पढ़ लिखकर नौकरी पा रहे हैं बल्कि लड़कियाँ भी सशक्त हो कर अपने परिवार को न सिर्फ जागरूक कर रही है बल्कि आर्थिक सम्बल भी बना रही है। इसके केन्द्र में है ग्रामीण क्षेत्रों में गैर–सरकारी संगठनों द्वारा चलाये जा रहे माध्यमिक विद्यालय है जहाँ की गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई और शैक्षिक माहौल ने शैक्षिक व जागरूक समाज के निर्माण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसा नही है कि इन क्षेत्रों में सरकारी विद्यालय नही है लेकिन जो काम इन एनजीओ संचालित विद्यालयों द्वारा किया जा रहा है वह तुलनात्मक रूप से सरकारी विद्यालयों द्वारा नही किया जा रहा है। शिक्षकों की संख्या भी कम है और जो आते हैं वो भी पढ़ाना नही चाहते हैं। इसी कारण जागरूक अभिभावक ऐसे विद्यालयों में अपने बच्चे का भविष्य खराब करने के लिए डालते ही नही है। गैर–सरकारी विद्यालय ऐसे में बहुत अच्छा विकल्प है और इसके परिणाम भी बहुत सकारात्मक है। जिला स्तर पर बच्चे मैट्रिक परीक्षा में टॉप टेन में स्थान ला रहे हैं। बच्चे न सिर्फ प्राइवेट नौकरी में जा रहे हैं बल्कि सरकारी सेवाओं में जैसे पुलिस, इंजीनियर, शिक्षक आदि कई क्षेत्रों में काम कर रहे हैं यह इन एनजीओ संचालित विद्यालयों का ही देन है। बच्चों के कौशल विकास कराये जाने से भी बच्चों के साथ–साथ समाज के लोगों में आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जा रहा है।

विशिष्ट शब्द – *एन.जी.ओ. संचालित विद्यालय, गैर–सरकारी विद्यालय, गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई, कौशल विकास, आत्मनिर्भर*

परिचय

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। सामाजिक परिस्थिति के आधार पर सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को दो भागों में बाँटा जा सकता है– गाँव तथा नगर। गाँव मानव के सामुहिक जीवन का प्रथम पालना माना गया है। मानव ने जब से रहना प्रारम्भ किया तो गाँव ही उसका निवास स्थान रहा। संसार की अधिकांश जनसंख्या आरम्भ से लेकर अब तक गाँवों में निवास करती रही है। नगरीय जीवन की शुरूआत तो अभी कुछ दिन पहले ही हुआ है। लॉरी नेल्सन के अनुसार– 'अभी थोड़े समय से पूर्व तक के मनुष्य की कहानी अधिकांशतः ग्रामीण मनुष्य की ही कहानी है।' अमेरिका और यूरोप के कुछ राष्ट्रों को छोड़कर संसार के अधिकांश राष्ट्र के 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। भारत में लगभग 72 प्रतिशत जनसंख्या अब भी गाँवों में निवास करती है। गाँवों का सामाजिक जीवन शहरों के लोगों के अपेक्षा काफी सरल होता है। लोग आपस में एक दूसरे से जूड़े रहते हैं। लोगों का सहयोग आपस में हमेशा बना रहता है। शादी, विवाह, भोज, जन्म संस्कार या पर्व त्योहार में लोगों का सहयोग अनिवार्य हिस्सा है।

विकास परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक देश के अधिकाधिक नागरिक उच्च भौतिक रहन–सहन के स्तर, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन प्राप्त करने साथ–साथ अधिकाधिक मात्रा में शिक्षित होने का प्रयास करते हैं। दूसरे शब्दों में, सामाजिक जीवन में गुणात्मक सुधार यथा स्वास्थ्य, पोषाहार, शिक्षा, आवास, औसत आयु, रहन–सहन की दशायें आदि तथा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति को सामाजिक विकास कहते हैं। व्यापक अर्थों में वांछित लक्ष्यों की ओर बढ़ने का नाम ही विकास है, किन्तु इसमें प्रयुक्त साधनों और यंत्रों का भी महत्व है, जितना लक्ष्य का। विकास में परिवर्तन और उन्नयन दोनों को सम्मिलित किया जाता है, किन्तु परिवर्तन को अर्थपूर्ण और विकास का सौद्देश्य होना आवश्यक है। विकास का सर्वस्वीकृत लक्ष्य प्रजातंत्रीकरण, आधुनिकीकरण, लौकिकीकरण, धर्मनिरपेक्षीकरण, सामाजिक कल्याण, संस्थाओं का निर्माण, सामाजिक मतैक्यता, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और हिंसारहित तरीकों से विकेन्द्रित समाज की रचना आदि है। विकास किसी समाज की क्षमताओं में होने वाले ऐसे गुणात्मक परिवर्तन को इंगित करता है जिसके द्वारा कार्यकलापों को अधिक प्रभावशाली ढंग से संगठित किया जाता है। विकास सम्बंधों के स्वरूपों, नवीन लक्ष्यों, विचारों और पद्धतियों में अभिवर्धन होने वाले संरचनात्मक परिवर्तन को परिलक्षित करता है। हम बहुधा विकास के साथ सामाजिक न्याय को जोड़ते हैं इसका तात्पर्य है कि अन्यों के अपेक्षा सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को विकास की रीति–नीतियों और स्वरूपों का अधिक लाभ मिले। अर्थात किसी समाज की विद्यमान दशा में कुछ सकारात्मक प्रगति का नाम विकास है। विकास के कई आयाम है जैसे सतत विकास, आर्थिक संवुद्धि व विकास, सामाजिक विकास, राजनीतिक भागीदारी आदि। सतत विकास को पर्यावरण और विकास के विश्व आयोग, 1987 ने परिभाषित कर कहा कि 'सतत/टिकाऊ विकास से तात्पर्य ऐसे विकास से है जो आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकास प्रक्रियाओं को अपनाता है।' आर्थिक विकास में मुख्य रूप से राष्ट्रीय आय में वृद्धि, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि,

जीवन स्तर में वृद्धि, आर्थिक कल्याण में वृद्धि एवं जीवन–प्रत्याशा का आँकलन किया जाता है। सामाजिक विकास से आशय है लोगों के विभिन्न समूहों के प्रति दूसरे लोगों के मानसिकता में बदलाव लाना है। जब लोगों में धर्म, जाति, संप्रदाय के संदर्भ में उदार भावना का विकास होता है तो इसे सामाजिक विकास कहा जा सकता है। राजनीतिक भागीदारी खासकर उन समाज के लोगों का कितना है जो सामाजिक रूप से पिछड़े हैं के संदर्भ में है। हालांकि संविधान से प्राप्त आरक्षण के कारण उनका प्रतिनिधित्व लोकसभा, विधानसभाओं व पंचायतीराज में देखने को मिल जाती है, इसके बावजूद उसकी नीति निर्धारण के कार्यों में कितना प्रभाव है, यह भी देखने वाली बात है और इसी आधार पर उनका राजनीतिक विकास को समझा जा सकता है।

शिक्षा मानव के प्रगति का आधार है। वर्तमान समय में शिक्षा का विकास से सीधा संबंध दिखाई देता है। जिस परिवार ने शिक्षा के महत्व को समझा है तेजी से सामाजिक व आर्थिक उन्नति को महसुस किया है और वह समाज में मजबूती से अपना स्थान हासिल किया है। गरीबी दूर करने का दो माध्यम है श्रम के–एक या तो शारीरिक श्रम या दूसरा मानसिक या बौद्धिक श्रम। आज के समय में देखा जाये तो शारीरिक श्रम करने वालों के अपेक्षा मानसिक श्रम करने वालों का वेतन ज्यादा होता है। खेत और मजदूरी करने वालों के तुलना में पढ़ –लिख कर नौकरी लेने वालों का वेतन ज्यादा है। इसका एक वजह उसकी शैक्षनिक योग्यता है, इसी के कारण शारीरिक रूप से समान दिखने वाले लोग अपने बौद्धिक विकास के कारण ही काफी अंतर पैदा कर लेते हैं। शिक्षा ही विकास को खिंचने वाली पहिया के रूप में काम करता है।

शोध का महत्व

समाज में विकास हेतु दो तरह के इकाई काम कर रहे हैं। एक सरकारी तंत्र और दूसरा निजी प्रयास। सरकार समाज के हरेह वर्ग को लाभ पहुँचाने के लिए तरह–तरह के प्रयास कर रही है। लोगों के गरीबी दूर करने के लिए भी कई तरह के प्रयास कर रही है। कई कल्याणकारी कार्यक्रम चला रही है। गरीबों के लिए आवास की बात करे तो जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीनीकरण मिशन, राजीव आवास योजना–2009, बीस सूत्री कार्यक्रम–2006, आवासीय एवं शहरी विकास निगम लिमिटेड, केंद्रिय सरकार कर्मचारी कल्याण आवास संगठन, नेशनल को–ऑपरेटिव हाउसिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया आदि है। स्वास्यथ्य और परिवार कल्याण के क्षेत्र में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन–2005, आयुष्मान भारत–2018, जननी सुरक्षा योजना–2005, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम–2011 एवं बाल स्वास्थ्य से संबंधित कई कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। हर तरह के बिमारियों जैसे एड्स, पोलियो, रक्ताल्पता व खसरा आदि से लड़ने के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। निजी प्रयास में इस दिशा में कई संगठन अपने स्तर से लगे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी सरकार ने कई कार्यक्रम शुरू किया ताकि लोग अधिकाधिक संख्या में शिक्षित हो, बच्चे विद्यालय तक पहुँचे और वहाँ रह कर प्रारंभिक स्तर की पढ़ाई पूर्ण करें। संविधान के 86वाँ संशोधन–2002 के द्वारा, अनु0 21'क' के तहत 6 से 14 वर्ष आयु के सभी बच्चों के लिए निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया। शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 के द्वारा निजी विद्यालयों में कक्षा एक में नामांकन हेतु 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित रखी गई। कई प्रावधान किये गये हैं ताकि बच्चे अधिकाधिक संख्या में विद्यालय पहुँचे। इसके बावजूद सरकारी विद्यालयों आज समृद्ध घराने के लोग अपने बच्चे नही भेजते हैं। सरकारी तंत्र उतना कारगर नही दिखता है। ऐसे में निजी संगठनों द्वारा ऐसे विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है जहाँ बच्चे अपने बौद्धिक विकास के लिए निर्भर हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऐसे विद्यालय संचालित है। ग्रामीण विकास में वास्तव में इन संगठनों का कुछ योगदान है कि सिर्फ पैसा कमा रहे हैं यह जानना निहायत जरूरी है। यही इस शोध में जानने का प्रयास किया गया है।

शोध का उदेद्श्यः

ग्रामीण विकास के संदर्भ में गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों का सामाजिक उत्थान में क्या भूमिका है, इसी का अध्ययन इसके तहत किया जाना है। अध्ययन में निम्नांकित क्षेत्रों में इनके योगदान को समझना है–

1. एनजीओ संचालित विद्यालयों में विद्याथियों की वर्ग आधार पर संख्या का अध्ययन करना।
2. इन विद्यालयों में लडके एवं लड़कियों के संख्या का अध्ययन करना।
3. विद्यालयों से निकले पूर्ववर्ती छात्रों के वर्तमान स्थिति का जानना।
4. वर्तमान में विद्यालय में संचालित विभिन्न कार्यक्रमों को जानना जिससे आस–पास के ग्रामीणों के कौशल विकास में योगदान सुनिश्चित होता है।
5. सामाजिक जागरूकता से संबंधित विद्यालय में कराये गये क्रियाक्लापों का अध्ययन करना।
6. लोगों के कल्याण हेतु इन विद्यालयों में सम्पन्न हुये विभिन्न कार्यक्रमों को रेखांकित करना।
7. मैट्रिक परीक्षा में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्याथियों के प्रदर्शन का अध्ययन करना।

अध्ययन–विधि– इसके अध्ययन के लिए साक्षात्कार एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी आँकड़ो का चयन किया गया है।

उपकरण– इस अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण के जरीये आँकडों का चयन किया गया है। आँकड़ो के चयन में वैद्यता एवं विश्वसनियता सुनिश्चित काने के लिए ही प्रश्नावली बनाकर दिया गया, कुछ व्यक्तिगत तरीके से राय भी लिया गया। विद्यालय के शिक्षक, विद्यालय प्रबंधन से संबंधित लोग, दात्रों एवं ग्रामीण लोगों से इस बाबत पुछ–ताछ की गई और उनके द्वारा विद्यालय से संबंधित जानकारी लिया गया।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन हेतु झारखण्ड राज्य के धनबाद जिला के झारखण्ड सरकार से मान्यता प्राप्त एनजीओ संचालित निजी विद्यालयों को लिया गया है।

सांख्यिकी तकनीकी– इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण प्रपत्र द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु पूर्व में किये गये शोध में अंकित पाई चार्ट के माध्यम से प्रतिशत सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। साथ ही प्रदत्त आँकड़ो का वर्णात्मक व्याख्या भी किया गया है।

न्यायदर्श एवं न्यायदर्शन तकनीकी–

इस अध्ययन हेतु जनसंख्या के तहत धनबाद जिला के ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थित सभी निजी विद्यालय है जिसमें से सरल यादृच्छिक प्रतिचयन के माध्यम द्वारा चार विद्यालयों का चयन किया गया।

आँकड़ों का संकलन–

इस अध्ययन को पुरा करने के लिए धनबाद जिले के कुछ एन.जी.ओ. संचालित विद्यालयों जैसे वनस्थली उच्च विद्यालय, तिलैया (रॉंगाटॉंड़) धनबाद; एकलव्य माध्यमिक विद्यालय, सहराज गोविन्दपुर; रवि महतो स्मारक उच्च विद्यालय, महुदा; मंदाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ा जमुआ, बरवाअड्डा के विगत कई वर्षों पहले के अध्ययनरत छात्रों के वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में कई पहलू में विकास के साथ देखा जा सकता है, यथा– रोजगार प्राप्ति के अवसर के रूप में, साक्षरता दर में विकास में, जीवन स्तर के विकास के रूप में, सामाजिक जागरूकता के रूप में आदि। प्रत्येक विद्यालय के पूरवर्ती छात्रों के वर्तमान स्थिति का अध्ययन तालिका संख्या– 1 और 2 में दिया गया है, जो निम्नांकित है–

तालिका संख्या–1. सेना या पुलिस में नौकरी पाने वाले छात्र

क्र. सं.	पूरवर्ती छात्र का नाम	विद्यालय का नाम	छात्र का पता	छात्र का वर्तमान स्थिति
1.	कैलाश महतो	वनस्थली उच्च विद्यालय, तिलैया (रॉंगाटॉंड़), धनबाद	ग्राम– मनईडीह, पो.– तिलैया, बरवाअड्डा	एन.एस.जी. जवान, गुड़गाँव
2.	आशीष कुमार महतो	वही	ग्राम– साधोबाद, खरणी, धनबाद	जे.ए.पी. जवान, साहेबगंज
3.	रीना कुमारी	वही	ग्राम– मनईडीह, तिलैया, बरवाअड्डा	झारखण्ड पुलिस, धनबाद
4.	संगीता कुमारी	वही	ग्राम– साधोबाद, खरणी, धनबाद	रेलवे पुलिस, धनबाद
5.	हरिशंकर साव	वही	ग्राम– छाताटॉंड़, बिराजपुर, धनबाद	झारखण्ड पुलिस
6.	छुटू लाल साव	वही	ग्राम– गोरगा, तिलैया, धनबाद	भारतीय आर्मी
7.	मिथुन साव	वही	ग्राम– छाताटॉंड़, बिराजपुर, धनबाद	वायु सेना जवान
8.	प्रदीप कुमार साव	वही	ग्राम– कुर्मीडीह, कल्यानपुर, धनबाद	झारखण्ड पुलिस
9.	अभिषेक कुमार	रवि महतो स्मारक उच्च विद्यालय, महुदा	माचाटॉंड़	झारखण्ड दारोगा
10.	अशोक कुमार महतो	वही	चरकीटॉंड़	दारोगा
11.	कृष्ण कुमार	वही	रेलवे कालोनी, भागा	दारोगा
12.	हेमन्त कुमार महतो	वही	मुरलीडीह	वायुसेना

तालिक 2. विविध क्षेत्रों में चयनित छात्र

1.	गोविन्द मोहली	वनस्थली उ0 विद्यालय, तिलैया	ग्राम– बांदोजोर, टुण्डी, गिरीडीह	रेलवे कर्मी
2.	शिवशंकर विश्वकर्मा	वही	टाटा सिजुआ, धनबाद	टाटा कर्मी
3.	प्रशान्त कुमार महतो	रवि महतो स्मारक उच्च विद्यालय, महुदा	मुरलीडीह, धनबाद	केनरा बैंक कर्मी

तालिका संख्या– 3. शिक्षक के रूप में नौकरी करने वाले छात्र

क्र. सं.	पूरवर्ती छात्र का नाम	विद्यालय का नाम	छात्र का पता	छात्र का वर्तमान स्थिति
1.	प्रेम चंद महतो	वनस्थली उच्च विद्यालय, तिलैया (रॉंगाटाँड़), धनबाद	ग्राम– मनईडीह, पो.– तिलैया, बरवाअड्डा	पारा शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, मनईडीह (झारखण्ड प्राथमिक शिक्षक में चयन)
2.	हेमन्त कुमार महतो	वही	ग्राम– साधोबाद, खरणी, धनबाद	पारा शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, कोनारटाँड (झारखण्ड प्राथमिक शिक्षक में चयन)
3.	शंकर किशोर महतो	वही	ग्राम– मनईडीह, तिलैया, बरवाअड्डा	पारा शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, तिलैया (झारखण्ड प्राथमिक शिक्षक में चयन)
4.	शंकर महतो	वही	ग्राम– तिलैया, बरवाअड्डा,धनबाद	पारा शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, तिलैया
5.	नारायण महतो	वही	ग्राम– बेंहचिया, तिलैया, धनबाद	पारा शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, धोवाटाँड़
6.	रामेश्वर महतो	वही	ग्राम– गोरगा, तिलैया, धनबाद	पारा शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, गोरगा
7.	धीरेन सोरेन	वही	ग्राम– निचितपुर, बरवाअड्डा,धनबाद	पारा शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, निचितपुर

इन आँकड़ो के अलावे विभिन्न प्रकार के नौकरियों में यहाँ से निकले लोगों ने सफलता प्राप्त की है। कई प्राईवेट कंपनियों में कार्य रहे हैं। कई राजमित्री, कई पुस्तैनी कारोबार, कोई व्यापार, कई राजनीति, ठेकेदारी के माध्यम से अर्थोपार्जन कर रहे हैं। इन निजी विद्यालयों से पढ़कर निकलने का फायदा इन्हें हर जगह हो रहा है। इससे उसकी समाज में प्रतिष्ठा की बढ़ोत्तरी ही होता है।

निजी विद्यालयों में सामाजिक जागरूकता हेतु कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं–

- **स्वच्छता अभियान हेतु जागरूकता–** विद्यालय के बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए विद्यालय में इसके लिए जागरूकता अभियान चलाया जा गया। बच्चों को साफ–सफाई के महत्व को समझाया गया। नुक्कट नाटक के जरिये पेड़ कम होने से मानव किस प्रकार प्रभावित होता है, इसे दर्शाया गया।
- **सामाजिक कुप्रथा के प्रति जागरूकता–** विद्यालय में समाज के विभिन्न तरह के कुप्रथा जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि सामाजिक कुप्रथा से होने वाले दिक्कतों के बारे में एकांकी, सेमिनार आदि के माध्यम से समझाया गया है, इसका भी प्रभाव बच्चें के माध्यम से समाज में संदेश दिया गया, इसका भी प्रभाव ग्रामीण समाज के उत्थान में पड़ा। वनस्थली उच्च विद्यालय, तिलैया के छात्रों ने शराब पीना, जुआ खेलना, आदि के प्रति रोक लगाने और गाँव समाज के महिलाओं को इससे प्रति जागरूकता लाने के लिए गाँव–घर में गली–गली में रैली निकाला गया।
- **राष्ट्रीय भावना के विकास में मददगार**– हर साल 15 अगस्त और 26 जनवरी के आयोजन के आलावे महापुरूषों के जनमदिन मनाने से भी बच्चों में राष्ट्रीय मुल्यों के प्रति जागरूक बनाने की भावना का विकास किया जाता है। इस तरह के प्रोग्राम प्रायः चारों विद्यालय में देखा गया। इसके लिए रैली भी निकाला गया।

आँकड़ों के विश्लेषण– उपरोक्त आँकड़ों का विश्लेषण वैयक्तिक अध्ययन करके किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित इन युवाओं के परिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का अध्ययन किया गया है कि ये युवा किन परिस्थियों से आगे निकलकर नौकरी प्राप्त की और आज ये अपने पैरों पर खड़ा हैं।

पिछड़ी जातियों से सम्बन्धित पास–आउट छात्रों का व्यक्तिक अध्ययनः

केस–स्टडी 1. कैलास महतो, एन.एस.जी. जवान

कैलाश महतो, पिता– स्व0 मनरथ महतो, ग्राम– मनईडीह, पोष्ट– तिलैया, जिला– धनबाद के निवासी है। उनका मैट्रिक वर्ष 2003 में हुआ और उसी वर्ष रिजल्ट के बाद ही भारतीय आर्मी के लिए चयन हो गया। मनईडीह में स्थित घर में उसके और दो भाईयों में केवल एक ही अभी है कुछ वर्ष पहले तीन बच्चे के पिता जवान मझिले भाई का निधन हो गया है। बचपन में ही पिता का मृत्यु हो गया था, इस स्थिति में माँ ने जंगल से पत्ता ला–ला कर दोना बना कर बेची, बड़े भाई ने सब्जी बेचकर मदद की, आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से संबंधित होने के कारण बहुत गरीबी में

बचपन बिता। इन्हीं स्थिति में इलाके में स्थित समाजसेवी हरिप्रसाद महतो द्वारा संचालित गैर–सरकारी विद्यालय वनस्थली उच्च विद्यालय, तिलैया में पढ़ कर मैट्रिक पास किया। सेना में भर्ती के लिए बहाली निकला, मेहनत के कारण दौड़ में सफलता प्राप्त कर ली और आज विद्यालय में मिली ज्ञान के कारण लिखित परीक्षा भी पास कर ली। आज 16 वर्ष से आर्मी में नौकरी करते हुए हो गया इस दौरान देश के अलग–अलग हिस्सों में जाकर अपनी सेवा देते आ रहे हैं। गाँव के लोगों में सरकारी नौकरी पाने का पहले पहल उदाहरण भी बने। इसतरह के सेना और पुलिस में कई लोग इस विद्यालय में पढ़कर निकलने वाले छात्र सेवा दे रहे हैं। विद्यालय की स्थापना 1990 में गाँववालों के मदद से की गई है। नक्सल प्रभावित क्षेत्र के बच्चों के सोच को बदलने में विद्यालय परिवार का अहम योगदान है, इस कारण गरीब घर के बच्चे सरकारी नौकरी में जगह बनाकर अपने वर्तमान को अच्छे से सवाँर रहे हैं। आसपास दस किलोमीटर के दायरे में वनस्थली उच्च विद्यालय के अलावे कोई हाई स्कूल भी नही है।

केस–स्टडी 2. आशीष महतो, जे.ए.पी. जवान

आशीष भी वनस्थली उच्च विद्यालय से उत्तीर्ण छात्र है। मुलतः साधोबाद, खरणी गाँव से ताल्लूक रखने वाले आशीष के पिता जीबलाल महतो का देहान्त बचपन में हो गया था। माँ ने सब्जी बेचकर परिवार को आगे बढ़ाया। दीदी व जीजा ने भी मदद की। मामा ने भी पढ़ाने में मदद की। आज वह झारखण्ड आर्म्ड पुलिस में शामिल होकर अपने पैर में खड़ा है।

केस–स्टडी 3. रीना कुमारी, झारखण्ड पुलिस

रीना कुमारी, पिता हुबलाल महतो ग्राम मनईडीह की रहने वाली है। पिता किसान हैं और खेती करके घर का काम काज चलाते हैं और उसी से अपने तीन पुत्रों और दो पुत्रियों न केवल पढ़ाये बल्कि शादी भी दिये। रीना कुमारी ने गरीब परिवार में जन्म लेने के बाद भी नौकरी के लिए प्रयास की और सफलता प्राप्त की।

केस–स्टडी 4. प्रेम चंद महतो, झारखण्ड प्राथमिक शिक्षक हेतु चयन

प्रेमचंद महतो, पिता–दशरथ महतो, मनईडीह के रहने वाले हैं। वे वनस्थली उच्च विद्यालय में 2001 बैच के पासआउट छात्र रहे हैं। वे एक दशक से अधिक समय से पारा शिक्षक रूप में गाँव के ही नया प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत थे। अभी हाल ही उनका चयन झारखण्ड प्राथमिक शिक्षा परीक्षा में हुआ है। जिसमें उनकी पोस्टींग हजारीबाग जिला के मान्डू विधान सभा क्षेत्र के एक विद्यालय में हुआ है। प्रेम के पिता किसान हैं और परिवार के भरत पोषण हेतु खेती कार्य के अलावे जंगल से केंदु पात या दोना निर्माण कर बेचने से प्राप्त आमदनी पर निर्भर रहे हैं। प्रेमचंद के साथ वनस्थली से पासआउट छात्र शंकर किशोर महतो भी इस परीक्षा में चयनित होकर चंदनकियारी विस क्षेत्र के एक स्कूल में योगदान दिया है।

दलित वर्गों से संबंधीत पासआउट छात्र का व्यक्तिक अध्ययनः

केस स्टडी 5. गोविन्द मोहली, रेलवे कर्मी

गिरीडीह जिला के बांदोजोर नामक गाँव से सम्बन्धित गोविन्द मोहली गरीब परिवार से संबंधित है। पिता गाँव के विद्यालय में पारा शिक्षक हैं, साथ ही पूरा परिवार बाँस की टोकरियाँ आदि बनाकर बेचता है, जिससे परिवार को आर्थिक सहायता मिलती है। अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखने वाले गोविन्द मामा धीरेन मोहली के घर मनईडीह में रहकर वनस्थली उच्च विद्यालय में पढ़ाई किया। वर्तमान में इलाहाबाद में भारतीय रेलवे में नौकरी कर रहा है। गोविन्द के भाई अनिल मोहली का चयन झारखण्ड दारोगा में हुआ है, वह भी निजी विद्यालय से ही पढ़कर आगे बढ़ा है।

आदिवासी क्षेत्र के विकास में कार्यरत एनजीओ 'श्री श्री लखिकान्त आदिवासी शैक्षणिक सांस्कृति एवं आर्थिक विकास संस्था, सहराज, गोविन्दपुर धनबाद': एक व्यक्तिक अध्ययन

इस संस्था के निर्माण और उत्थान की कहानी, संस्थापक **श्री शैलेन्द्र** की जुबानी, जो उन्होनें अपने पत्रिका दिगन्त पथ में रखी– हमारे लिए दिगन्त पथ की यात्रा 'कर्मयोग साधना' है और इस मध्य मान–अपमान, उत्थान–पतन, जय–पराजय जो कुछ भी मिला, सब हमें प्रेरण देनेवाली सत्ता को समर्पित पुष्प है। क्या भूलूँ, क्या याद करूँ की स्थिति है फिर भी 31 वर्षों के प्रमुख घटनाक्रमों को प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। पूरे देश के मशीनों को ऊर्जा प्रदान करने वाला यह क्षेत्र (धनबाद) आने वाले दिनों में वैचारिक ऊर्जा का भी केन्द्र बनेगा। इस विश्वास के साथा 09. 11.1983 को 'दिगन्त' नाम से साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया। पत्रिका का विमोचन करते हुए दैनिक आवाज के तत्कालिन सम्पादक स्व. ब्रह्मदेव सिंह शर्मा ने कहा था कि दिगन्त एक गूँजता हुआ नाम है और हमें विश्वास है कि आनेवाले दिनों में यह नाम सवत्र गूँजेगा। हमने इस अवसर पर कहा था कि भौतिवादी संस्कृति से लबालब इस माफिया नगरी में जहाँ हर कोई देश का सबसे बड़ा कोयला मण्डी कतरास मोड़ की ओर चला जा रहा है वहाँ धारा के विपरित चलने का यह भागीरत संकल्प ईश्वरीय प्रेरणा से लिया गया है, हमें पूर्ण विश्वास है कि कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के बाद तीव्र गति से उत्पन्न नव पूँजीवाद का आभामंडल क्षीण होता चला जाएगा, माफिया संस्कृति का प्रभाव घटेगा और पूरे देश के मशीनों को ऊर्जा प्रदान करने वाले इस क्षेत्र से नवनिर्माण का एक दिव्य आन्दोलन फूटेगा। इस हेतु चेतना अभियान चलाने के उद्देश्य से ही इस पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया है और आज यहाँ जो कुछ भी हो रहा है, आने वाले दिनों में उसका परिणाम दुनिया देखेगी।..... विमोचन के बाद पत्रिका की प्रतियाँ हम मुफ्त वितरित करने लगे। देशभर के लगभग तीन हजार रचनाकारों एवं युवकों के साथ पत्रिका के माध्यम से जुड़ाव हुआ। दिगन्त पथ के पाठकों का परिवार ही धीरे–2 दिगन्त परिवार नामक गैर–दलीय संगठन के रूप में विकसित हुआ और संगठन द्वारा विभिन्न प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों का संचालन किया जाने लगा। दिगन्त पथ के माध्यम से

सम्पर्क में आये युवकों के बीच चिन्तन एवं स्वाध्याय का क्रम चलता रहा। गाँधी जी की पुस्तक 'मेरे सपनों का भारत', विवेकान्द द्वारा आलासिंगा को लिखे गए पत्रों एवं विनोबाजी के 'गीता प्रवचन' आदि के भावों से प्रेरित होकर हमलोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि केवल क्रान्तिकारी विचारों के प्रचार–प्रसार से बात नहीं बनेगी। अतः हमलोगों को मिलकर ग्रामीण क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य शुरू करना चाहिए। हमारे प्रेस में शक्तिपद नाम का एक कम्पोजिटर काम करता था। उसी के माध्यम से धनबाद शहर के चार–पाँच युवकों के साथ 05 जनवरी 1986 को टुण्डी प्रखण्ड के नेटवारी गाँव में पहुँचे। हमलोग यहाँ की स्थिति, परिस्थिति, संस्कृति एवं भाषा आदि से पूर्णतः अनभिज्ञ थे। दिनभर हमलोग ग्रामीणों को अपनी भावना एवं योजना समझाने का प्रयास करते रहे लेकिन उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उनके ऊट–पटाँग सवालों एवं व्यंग्य वाणों से तंग आकर हमलोग वापस लौटने वाले थे, उसी समय रामेश्वर महतो, अजीत कुमार आदि चार–पाँच युवकों ने आगे बढ़कर कहा कि हमलोग आपका साथ देंगे। यहीं से शुरू हुआ ग्रामीण क्षेत्रों में चेतना अभियान। 13 जनवरी को हमलोग पुनः नेटवारी गये। उस दिन उन युवकों ने गाँव के अधिकांश लोगों को एकत्रित कर एक बैठक आयोजित की थी। हमने अपनी पूरी प्राण ऊर्जा लगाकर तर्कपूर्ण ढंग से लोगों को बदहली के कारणों एवं मुक्ति के उपायों के बारे में समझाते हुए कहा कि प्रथम कदम के रूप में हमलोग इस गाँव में एक चेतना स्थल का निर्मान करना चाहते हैं। हमने चेतना स्थल की कल्पना उनके समक्ष रखते हुए कहा कि आपलोग एक कमरा की व्यवस्था कीजिए। उसी गाँव के परमेश्वर कुमार ने अपना एक कमरा इस निमित्त दिया और यह तय हुआ कि 26 जनवरी को चेतना स्थल की स्थापना की जाएगी।

अब हमलोगों ने धनबाद में सक्रिय सामाजिक संगठनों के पास जा–जाकर उन्हें अपनी योजा के बारे में समझाना शुरू किया। उन दिनों शहरी क्षेत्र में शास्त्री नगर यूथ, लायन्स क्लब ऑफ शास्त्रीनगर, रॉटरी क्लब झरिया आदि संस्थायें काफी सक्रिय थीं। सबों ने उत्साह बढ़ाया। 26 जनवरी 1986 को लेखिका कनकलता जी एवं टुण्डी के तत्कालीन प्रखण्ड विकास पदाधिकारी श्री नरेश प्रसाद सिंह, जो बाद में धनबाद जिला विकास अभिकरण के निदेशक पद पर भी रहें हैं ने चेतनादीप प्रज्ज्वलित कर नेटवारी में प्रथम चेतना स्थल की स्थापना की। शहर के कुछ भावनाशील व्यवसायियों के सहयोग से दरी, पेट्रोमैक्स, दूरदर्शन सेट एवं कुछ प्रेरक पुस्तकों की व्यवस्था की गई।

नेटवारी में जो चेतना स्थल स्थापित की गई थी उसका व्यापक प्रभाव हुआ। प्रतिदिन शाम को चेतना दीप प्रज्जलित की जाती थी और गाँधी जी के सुमति मंत्र 'रघुपति राघव.....' का सामूहिक गान एवं स्वाध्याय का क्रम चलता था। रविवार को हमलोग भी पहुँचते थे। और दिनभर विभिन्न विषयों पर विचार–विमर्श करते थे, कभी–2 सफाई अभियान भी चलाते थे, शिक्षण संस्थानों की स्थिति, विकास योजनाओं के स्वरूप प्रखण्ड विकास कार्यालय में मची लूट, सांस्कृतिक प्रदूषण, सामाजिक कुरीतियाँ आदि पर भी चर्चा–परिचर्चा होती रहती थी। इन सबों के कारण बच्चों, महिलाओं, पुरूषों एवं युवकों की चेतना में अप्रत्याशित वृद्धि हुई और इसका परिणाम भी सबको दिखने लगा। खण्ड–खण्ड में विभक्त नेटवारी अखण्डता की दिशा में बढ़ने लगा। कोर्ट में चल रहे कई मुकदमों को समाप्त किया गया। पहली बार गाँव में सार्वजनिक रूप से सरस्वती पूजा का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि पहले इस छोटे से गाँव में पाँच–छह जगह लोग सरस्वती पूजा किया करते थे जो अनावश्यक तनाव एवं गुटबाजी का कारण बनता था। हमने स्वतंत्रता आन्दोलन के मध्य तिलक जी द्वारा महाराष्ट्र में सामुदायिक चेतना विस्तार हेतु किये गये गणेशोत्सव के बारे में समझाया और सब लोग सार्वजनिक पूजा की बात मान गए।

अब हमलोग नियमित रूप से नेटवारी जाने लगे और ज्यादा से ज्यादा समय उनके बीच व्यतीत करने लगे। उत्साहित ग्रामीणों ने जमीन दान दी और श्रमदान से 50 गुणा 12 आकार का एक भवन बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई। ग्रामीणों ने आपस में सहयोग कर चंदा इकट्ठा किया, शहरी क्षेत्र से जुड़े लोगों ने भी सहयोग किया और देखते–देखते निर्माण का कार्य पूरा हो गया। गाँव के हर नर–नारी, युवक एवं बच्चा ने इस श्रमदान यज्ञ में अपना योगदान किया। बाद में यही भाव विकिसत रूप से प्रकट हुआ चेतना महाविद्यालय के निर्माण के समय सहराज में और मात्र 20 दिनों में 5 कमरों का निर्माण कार्य इसी प्रक्रिया से पूरा किया गया। नेटवारी में जो कुछ भी हो रहा था उसकी चेतना जंगल की आग की तरह चारों ओर फैल गई। आस–पास के गाँवों के युवक आ–आकर हमलोगों को अपने–अपने गाँव में आमंत्रित करने लगे। फिर शुरू हुआ गाँव–2 में विचार गोष्ठियों एवं जनसंपर्क का अन्तहीन सिलसिला। इसी क्रम में कल्याणपुर, रोतरा, चैनपुर, बरवाटाँड़, कदैयाँ, कटनियाँ, महाराजगंज आदि में चेतना स्थलों का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। इन जगहों पर नेटवारी वाली प्रक्रिया अपनाई गई।

चेतना महाविद्यालय अर्थात् एकलव्य माध्यमिक विद्यालय और ट्रस्ट का निर्माण– दिगन्त पथ के माध्यम से भावनाशील युवकों के अन्तःकरण में सपनों का जो बीजारोपन किया गया उसका प्रकटीकरण चेतना महाविद्यालय के रूप में हुआ है। चेतना महाविद्यालय की कल्पना दिगन्त परिवार के स्वप्नजीवी परिवर्तनकामी युवकों ने वर्ष 1988 से ही करनी शुरू कर दी थी। हमलोग जब भी इकट्ठा होते तो इस कल्पना को जमीन पर उतारने हेतु चिंतन करते। इसी मध्य चेतना के दुश्मनों का आक्रमण हुआ और उनसे निपटने में ही कई वर्ष बीत गए। लेकिन हमलोगों के दिलों में अंकुरित हुआ यह सपना मरा नही। अतः थोड़ा निश्चिंत होते ही हमलोगों ने जमीन की तलाश शुरू कर दी। हाथसरा, रघुनाथपूर, बड़बाद आदि कई जगहों पर जमीन देखी गई लेकिन बात बनी नहीं। 'पैसा न कौड़ी बीच बाजार में दौड़ा–दौड़ी' यही थी हमलोगों की स्थिति। इसी मध्य सहराज के भूतपूर्व मुखिया स्व0 लखिकान्त हेम्ब्रम जी पौराणिक काल के दधीची की तरह आगे आए और हमलोगों को प्रोत्साहित करते हुए कहा 'आपलोग रात दिन समाज के लिए ही सोचते रहते हैं और हमें आपलोगों पर पुरा विश्वास है। उन्होंने अपना जमीन दिखाते हुए कहा कि अगर पसन्द हो तो यह जमीन आपलोग ले लीजिए। हमारी जिन्दगी का कोई ठिकाना नही है। अतः तत्काल काम शुरू कीजिए।' उस समय हमलोगों को जो

प्रसन्नता हुई उसका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उसी समय से हमलोग मुखिया जी को भगवान रूप में मानने लगे हैं। वैसे ही लखिकान्त का अर्थ विष्णु ही है। जमीन तो मिल गई पर फटेहाली के उस भयावह दौर में करें तो कैसे करें की स्थिति थी। हर पहलू पर गहराई से विचार विमर्श करने के बाद हमलोगों ने श्री श्री लखिकान्त आदिवासी शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास संस्था (एन.जी.ओ.) का गठन किया और काम में जुट गए। इसी मध्य साथी संजीव के माध्यम से पूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से भावात्मक योगायोग हुआ, जो उन दिनों युवा शक्ति अभियान का ताना बुनने में व्यस्त थे। हमलोगों की गतिविधियों को देख समझकर वे बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अपने दो प्रतिनिधि श्री राजेन्द्र परिहार एवं श्री शेखर सिंह को धनबाद भेजा। उन्होंने 30 जून को उद्घाटन हेतु समय भी दे दिया। परिहार जी ने नींव रखी, अरूण जी ने खाना बनाने की आहुतियाँ डालनी शुरू की और मात्र 20 दिनों में पाँच कमरों का आकर्षक भवन बनकर तैयार हो गया। इसी मध्य एक मजेदार घटना घटी। चेतना के दुश्मनों की एक टीम श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के पास पहुँचकर उन्हें गुमराह करने का प्रयास किया। कुछ लोग बिहार के तत्कालीनमुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव जी के पास गये जिसमें उनके सहयोगी दल के जनप्रतिनिधि भी थे। लालू जी ने तत्कालीन पुलिस अधीक्षक को फोन किया और रात में छापामारी कर हमें एवं मुखिया जी को गिरफ्तार कर धनबाद थाना लाया गया। दिनभर विभिन्न थानों के पुलिस पदाधिकारियों ने तरह–2 से पता लगाया और अंततः खोदा पहाड़ निकली चुहिया वाली कहावत चरितार्थ हुई। लज्जित प्रशासन ने हमलोगों को क्षमा याचना सहित ससम्मान विदा किया और चेतना के दुश्मनों के मुँह पर एक बार पुनः कालिख पुत गई। सत्य विजयी हुआ। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को जब उक्त घटना की जानकारी हुई तो वे बहुत दुःखी हुए। दुर्भाग्यवश उसी मध्य उनकी किडनी की बिमारी का पता चला और उन्हें ईलाज हेतु विदेश जाना पड़ा। उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में श्री राममूर्ति जी को भेजा। हुल दिवस 30 जून 1995 को देश के जाने माने सर्वोदयी हस्ती हस्ती आचार्य राममूर्ति जी ने इस केन्द्र का उद्घाटन किया था। इस हेतु हमलोगों ने श्री श्री लखिकान्त आदिवासी शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास संस्था का गठन किया है जो विधिवत निबंधित है।'

इस संस्था द्वारा ग्रामीण विकास हेतु निम्नांकित कार्यक्रम चलाये गये–

1. **बंजर भूमि मुक्ति आन्दोलन–** श्री शैलेन्द्र जी के देख–रेख में ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थित बंजर भूमियों में श्रम दान करके ऊपजाऊ बनाया गया और इसके लिए समय–समय पर गोष्ठी का आयोजन कर जिला भर के किसानों को कृषि एवं पशुपालन के मूलभूत तत्वों का व्यावहारिक ज्ञान दिया गया। इन गोष्ठियों में आने वाले बहुत प्रेरित हुए परिणाम स्वरूप आस–पास के हजारों एकड़ जमीन में सब्जी की खेती होने लगी। इस आन्दोलन में एक नारा दिया गया– 'हल पर चढ़ा नगाड़ा तीर, हर लेंगे दुनिया के पीर।'
2. **साक्षरता अभियान में भागीदारी–** राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के तत्वाधान में वर्ष 1994 में धनबाद जिला में साक्षरता अभियान शुरू करने की दिशा में दिगन्त पथ परिवार के सभी कार्यकर्त्ताओं ने अपने–2 हिस्से का योगदान दिया। दिगन्त परिवार उपायुक्त की अध्ययक्षता में गठित 'जिला साक्षरता वाहिनी' का अभिन्न अंग है। वर्ष 1993–94 में धनबाद जिला में साक्षरता अभियान का शुभारम्भ हुआ। अभियान के शुभारम्भ से पूर्व वातावरण निर्माण हेतु प्रथम जत्था का प्रशिक्षण दिगन्त पथ परिवार द्वारा नेटवारी गाँव में संचालित चेतना केन्द्र से ही हुआ। जिला में चल रहे सतत् शिक्षा कार्यक्रम में भी इस संगठन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
3. **लेखन द्वारा जागरूकता फैलाना–** साक्षरता अभियान के समय में वैचारिक पत्रिका 'अभियान' एवं 'दूसरी दुनिया' के माध्यम से हजारों भावनाशील युवकों को साक्षरता अभियान से जोड़ा था। दिगन्त पथ पत्रिका के माध्यम से भी इसी तरह युवाओं में सकारात्मक एवं प्रेरक विचारों को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।
4. **विद्यालय का संचालन–** इस ट्रस्ट के माध्यम से 'एकलब्य माध्यमिक विद्यालय, सहराज' संचालित है। यहाँ 150 से अधिक विद्यार्थियों को छात्रावास में कम शुल्क में रखकर अच्छी शिक्षा दी जाती है। जहाँ बालकों एवं बालिकाओं के लिए पृथक छात्रावास है। यह विद्यालय माध्यमिक स्तर तक का है।

शोधकर्त्ता के पूर्व में किये गये निजी विद्यालयों का ग्रामीण विकास में योगदान संबंधी कुछ रिपोर्ट निम्नांकित है–

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची द्वारा लिये जा रहे मैट्रिक की परीक्षाफल में पिछले 6 वर्षों में धनबाद जिला के टॉप पाँच विद्यार्थियों के परीक्षाफल में गैर–सरकारी विद्यालयों के परीक्षा में प्रदर्शन का अध्ययन शोधकर्ता ने किया था जिसमें पाया गया था कि 60 प्रतिशत बच्चे ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थित गैर सरकारी विद्यालयों के थे।

शोधकर्त्ता द्वारा एक शोध कौशल विकास हेतु गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में चल रहे कार्यक्रमों के अध्ययन हेतु किया गया था, जिसमें पाया गया था कि कई निजी विद्यालय जैसे वनस्थली उच्च विद्यालय, तिलैया (रॉंगाटॉड़) धनबाद, एकलव्य माध्यमिक विद्यालय, सहराज आदि में कौशल विकास से सम्बंधित कई कार्यक्रम जैसे– कम्प्युटर शिक्षा, प्रेस संचालन का ज्ञान, सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण कार्य, विज्ञान मेला का आयोजन आदि चलाये जा रहे हैं।

शोधकर्त्ता ने सत्र 2016–17 के 20 गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित 26 निजी विद्यालयों में वर्ग नवम एवं दशम् में पढ़ने वाले विभिन्न वर्गों के कोटीवार स्थिति को जानने हेतु एक शोध किया था जिसमें यह पाया गया था कि इन विद्यालयों में 47 प्रतिशत बच्चे पिछड़ी जाति से हैं, 15 प्रतिशत अनुसूचित जाति से, 9 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति से और 15 प्रतिशत बच्चे सामान्य वर्ग से ताल्लूक रखते हैं। इसी अध्ययन में पाया गया कि वर्ग नवम् एवं दशम् में कुल 51 प्रतिशत बालिकायें नामांकित थी और 49 प्रतिशत बालक नामांकित थे।

निष्कर्ष–

- एन.जी.ओ. संचालित विद्यालय गाँव–2 तक अपने शैक्षिक माहौल के कारण समाज में जागृति लाने में महत्वपुर्ण भूमिका निभा रहा है।
- वनस्थली उच्च विद्यालय नक्सल प्रभावित क्षेत्र में अवस्थित है, उस विद्यालय से निकलने वाले कई छात्र झारखण्ड पुलिस, आर्मी व सेना में नौकरी प्राप्त किये हैं। ऐसे इलाके से निकले छात्र नक्सलवाद के जड़ के पनपने के कारण को अपने आँख से देखे होते हैं। इस तरह के समस्या के समाधान वे अधिक कारगर तरिके से कर सकते है।
- प्रत्येक गाँव के लोगों के साक्षरता दर में हर साल सुधार देखा जा रहा है। कोई भी ऐसा परिवार बमुश्किल होगा जिसके घर से बच्चे विद्यालय नही जाते होंगे। लोग साक्षर होने से समाज में हर तरह के रूढ़िवादी विचारों के प्रति लोगों में जागरूकता आती है।
- हर घर की बालिकायें न सिर्फ पढ़ कर आगे निकल रही है। उच्च शिक्षा की ओर अग्रसित हो रही है, बल्कि सरकारी नौकरी में भी आ रही है। वनस्थली उच्च विद्यालय, तिलैया से रीना कुमारी और संगीता कुमारी ने पुलिस में नौकरी प्राप्त की।
- पुलिस में जाने वाले अधिकांश लोगों का परिवार आर्थिक रूप से कमजोर रहा है, ऐसे परिवार में रहने वाले सदस्य पैसे के किल्लत से बखुबी परिचित होते हैं, इसलिए नौकरी कैसी भी क्यों न हो, ऐसे परिवार के युवा नौकरी पाना भगवान पाने के बराबर समझते हैं।
- कई पुरवर्ती छात्र शिक्षक के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं और समाज के हासिये पर रह रहे बच्चों को आगे शिक्षित कर आगे बढ़ा रहे हैं। खुद निजी विद्यालयों में पढ़कर निकले और समाज को बताने लायक बने। जो सीखे वे इन विद्यालयों में वही बाँट रहे हैं।
- कोटिवार, लैंगिक आधार पर इन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी सामाजिक अनुपात में ही है, इससे समाज के सभी वर्गों के बच्चों में समान रूप से सामाजिक जागरूकता का विकास होगा।
- इन विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों में कौशल विकास हेतु भी कई क्रियाक्लाप विद्यालय में कराये जाते हैं, इससे भी बच्चे आगे चलकर आत्मनिर्भर बनेंगे, इससे भी सामाजिक रूप से उनका उत्थान होगा।
- गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में पढ़ने वाले 60 प्रतिशत बच्चे जिला में टॉप स्थान पाने में सफल हो रहे हैं, इससे भी ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों में शिक्षा के प्रति इस प्रकार की जागरूकता को बयाँ कर रहा है, इससे ये भी सीख मिलता है कि देश और खास कर गाँव की तश्वीर बदल रहा है।
- कुल मिलाकर देखा जाये तो ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थित इन निजी विद्यालयों ने ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को न सिर्फ जागरूक किया है बल्कि प्रतिस्पद्धी भी बनाया है। लोग नौकरी प्राप्त कर ही रहे हैं, साथ ही शिक्षा के महत्व को समझ गये हैं। इन सब में इन ग्रामीण क्षेत्र के गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित निजी विद्यालयों का अहम योगदान है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में निजी विद्यालयों के प्रयास से शिक्षा के स्तर में काफी सुधार हुआ है, न सिर्फ बालक बल्कि बालिकायें भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ये सब देखते हुए यह बरबस गीत याद आती है– 'ले मशालें चल पड़े है लोग मेरे गाँव के, अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के।'

सुझाव– ग्रामीण विकास में सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का योगदान और अधिक कारगर होगा यदि इन विद्यालयों से निकले विद्यार्थी जॉब करने के अलावे अपने व्यक्तिगत प्रयास से और अधिक अच्छा करने के लिए प्रेरित होते तो अपने गाँव को और अच्छा बना सकते हैं। ऐसे क्षेत्रों में पढ़े लिखे नौजवानों को बैठ कर यह सोचना चाहिए कि हम अपने समाज को और अधिक विकसित बना सकते हैं। समाज में क्या–क्या बुराई है, उसका मुल कारण क्या है, उसका समूल नाश करने का उपाय ढूँढ़ना चाहिए। निजी विद्यालयों को ग्रामीण सामाजिक परिवेश के बारे में और अधिक जानकर विद्यार्थियों को विकास हेतु प्रेरित करना चाहिए। सामाजिक बुराई जैसे–दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, मादक द्रव्यों के सेवन आदि के प्रति सचेत करने हेतु अधिक बल देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. 'भारत' (2013): सूचना एवं प्रसारन मंत्रालय, भारत सरकार।
2. 'नई दिशा' पत्रिका, जून 2013.
3. दिगन्त पथ पत्रिका, नवम्बर 2014.
4. ग्रामीण शिक्षा, कुरूक्षेत्र, अंक 11, सितम्बर 2012.
5. तरूण कुमार महतो (2018): 'सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षण संस्थानों का वार्षिक माध्यमिक परीक्षाफल का तुलनात्मक अध्ययनः झारखण्ड राज्य अंतर्गत धनबाद जिले के विशेष संदर्भ में', The International Journal of Advanced Research in Multidisciplinary Sciences, Vol-1, issue-2, June-Dec2018, Bindki, Fatehpur, p. 60-66.
6. तरूण कुमार महतो (2018): 'कौशल विकास व डिजिटल भारत निर्माण हेतु सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा झारखण्ड में विद्यालय स्तर पर की जा रहे योगदान का अध्ययन', जर्नल ऑफ इण्डसट्रीयल रिलेशनशीप,

कॉरपोरेट गवर्नेन्स एण्ड मैनेजमेट एक्सप्लोरर, ,नेशनल रिसर्च एण्ड जर्नल पब्लिकेशन, वोल्युम 2 इस्सू 3, गाजियाबाद, पेजः 27–40।

7. तरूण कुमार महतो (2017): 'माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में गैर–सरकारी संगठनों का उपेक्षित वर्गों के शिक्षा को बढ़ावा देने संबंधी भूमिका एवं योगदान का अध्ययन करनाः झारखण्ड राज्य के विशेष संदर्भ में', Journal for Social Reality, Vol-4, No.- 4, Institute for Social Development and Research, Ranchi, p. 40-46.